IMPACT FACTOR : 3.0498 ISSN-2348-2702
Peer Reviewed

15

APOORV KNOWLEDGE

International Journal of
Multidisciplinary Rese

September - 2019 Vol. VII Issue - III

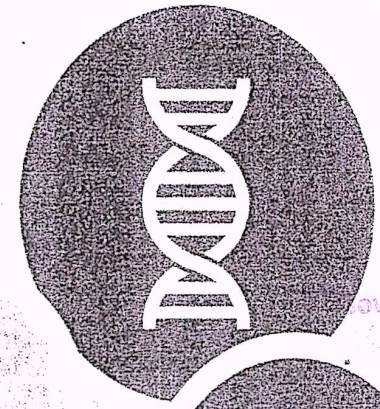

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

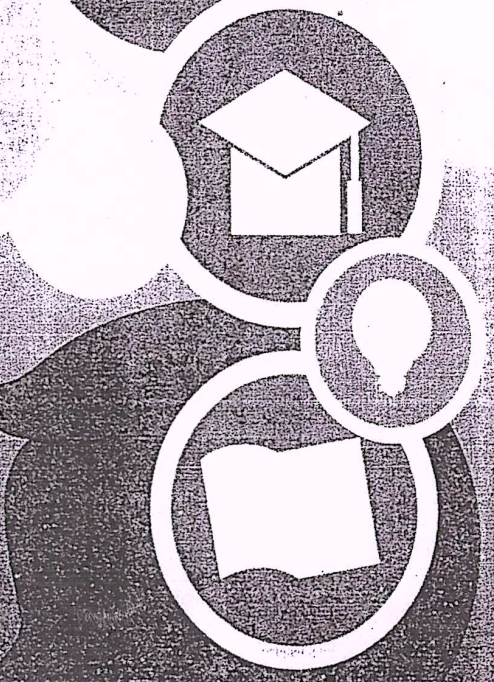

EDITOR-IN-CHIEF : DR. VANDANA BANKAR

INDEX

Sr.No.	Topic		Author	Page No.
1	Need Of E-Content Development In Education	-	Dr.Anand M. Wagh	7
2	Emotional Intelligence In Relation To Job Satisfaction Of College Teachers	-	Dr. Sudhir Mulchand Pawar	11
3	Margaret Laurence: Life and Manawaka Novels	-	Makarand Chandrkant Joshi	15
4	Role of Journalism In Indian Struggle For Freedom	-	• Mr. Makrand Ramrao Wakde • Dr.VishwambarKamlaji Chavan	19
5	Evaluation and communication programs on validated indigenous Vad and Dhatura plants used in Hindu rituals.	-	• Vrushali Bhaskarrao Bonde • Dr. Mrs. Kumudini R. Dhore	22
6	Cyber Terroriesm In India	-	Jyotsna M. Bhivsane	25
7	Becomings in J. M. Coetzee's Waiting for the Barbarians	-	• Vishal Hariharrao Kharat • Dr. K. S. Patil	28
८	योग की प्रासंगिकता : वर्तमान सन्दर्भ में	-	संजय भारतीय	३१
९	साइबर आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या	-	डॉ. अशोक कुमार राय	३७
१०	भाषा अनुसंधान और शैली विज्ञान	-	डॉ. भगवान पी. कांबळे	४४
११	से.रा.यात्री के उपन्यासों में कामकाजी नारी : एक मूल्यांकन	-	डॉ. सुनील पानपाटील	४७
१२	गाँव का मन निबंधों में गाँव के उत्सव और संस्कृति का चित्रण	-	प्रा.डॉ. उत्तम जाधव	५२
१३	हिंदी कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व	-	केशव माधवराव मोरे	५६
१४	किन्नरों का समाज और समाज में किन्नर	-	डॉ. सरोज एन. पगारे	६०

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

Impact Factor - 3.0498 ISSN -2348-2702 Vol - VII, Issue - III, September 2019

भाषा अनुसंधान और शैली विज्ञान

डॉ. भगवान पी. कांबळे

सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद (म.रा.)

प्राचीन काल से भाषा पर विचार–विमर्श और अनुसंधान होता रहा है। हमारे लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि, भाषा को लेकर दूनिया में भारत देश के विद्वानों ने सबसे पहल की । इनमें पाणिनी का 'अष्टाध्यायी' नामक भाषा ग्रंथ, पतंजलि का 'महाभाष्य' मुनि यास्क का 'निरूक्त आदि प्राचीन ग्रंथ भाषा अनुसंधान के दूनिया के श्रेष्ठ भाषा ग्रंथों में सबसे ऊपर है। आज पाश्चात्य विद्वान मुक्तकंठ से इन ग्रंथों का प्रशंसा करते है । किसी बोली या भाषा के अनुसंधान की अपनी स्वतंत्र प्रविधि होती है। भाषाकोश को तैयार करने का भिन्न शिल्प होता हैं। किसी भाषा या बोली का अध्ययन या तो ऐतिहासिक पध्दति से किया जाता है या वर्णनात्मक पध्दति से। ऐतिहासिक पध्दति से भाषा का अनुसंधान करने के लिए प्राचीन भाषा में लिखे गये साहित्य का अध्ययन अपेक्षित होता है। यदि हम खड़ीबोली पर अनुसंधान करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें यह पता होना चाहिए कि यह भारोपीय परिवार की भाषा है। अतः हमें इस बात की खोज करनी होगी कि यह कौनसी जनभाषा से विकसित हुई है। जैसे खड़ीबोली, शौरसेनी अपभ्रंश इस जनभाषा से विकसित हुई है। इसके भी पिछे जाकर यह देख सकते हैं । यह शौरसेनी जनभाषा क्या है? तो अनुसंधान की प्रक्रिया से हमें यह पता चलेगा की यह सूरसेन प्रदेश की कभी भाषा कहलाती । जो "सूरसेन" नामक राजा के नाम से जाना जाता था। अनुसंधानकर्ता को इस बात की खोज या तलाश करनी होगी कि अपभ्रंश साहित्य जहाँ भी उपलब्ध हो उसे खोजकर पढना होगा और देखना होगा कि खड़ीबोली की प्रकृति उसमें किस अंश में विद्यमान है। क्योंकि किसी के भाषा परिवार को जानने के लिए केवल शाब्दिक ऐक्य ही पर्याप्त नहीं होता उसके व्याकरणिक ढाँचे में भी एकता देखनी पड़ती है। उदाहरण के रूप में "अमीर खुसरों" को विद्वानों ने "खडीबोली" का पहला कवि बताया है। इसका मूल कारण यह है कि अमीर खुसरों के साहित्य में जो खड़ीबोली को लेकर व्याकरणिक ढाँचे मे एकता पायी जाती है। साथ ही उनके काव्य में कई शब्द ऐसे है जो ब्रज, बुंदेली, बांगरू, कनौजी के शब्दों से मिलते–जुलते नजर आते है। क्योंकि यह सभी बोलियाँ शौरसेनी जनभाषा से विकसित हुई है फिर भी व्याकरणिक ढाँचे के आधार पर सभी बोलियों में अंतर स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। यह समझना आवश्यक है अन्यथा हमारा अनुसंधान भटक सकता है या दूसरी दिशा में जा सकता है। इसलिए अनुसंधान की प्रक्रिया में भाषा के ऐतिहासिक या प्राचीन स्वरूप को समझना अनुसंधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है।

भाषा अनुसंधान की प्रक्रियाओं में से की गई खोज के बारे में डॉ.भोलानाथ तिवारीजी का यह कथन यहाँ बडा प्रासंगिक लगता है। उनके मतानुसार–"भाषा, उच्चारण अवयवों से उच्चरित , यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज – विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते है।"[2] इसी कड़ी में मैं अपने आलेख के अनुसार संक्षिप्त में शैली विज्ञान की अहम भूमिका क्या रही है इस पर भाष्य करना अनिवार्य समझता हूँ ।

शैली विज्ञान–सामान्य रूप में हिन्दी में शैली शब्द का प्रयोग "स्टाइल" (Style) के पर्याय के रूपमें किया जाता है । अब तक शैली को भाषा के साथ जोडकर 'भाषा शैली' शब्द बनाया गया और उसका अर्थ भाषा के प्रयोग का ढंग अथवा भाषा के रूप के अर्थ में किया जाता है । हा यह सच है कि सबकी लेखन शैली और भाषा का प्रकार एक निश्चित रूपमें होता है । मनुष्य को उसकी शैली से जाना या पहचाना जाता है। इसी संदर्भ में अंग्रजी भाषा ब्यूकॉ वचन प्रचलित है–"स्टाइल इज दी मैन हिमसेल्फ"[3] Style is the man himself आशय यह है कि मनुष्य या व्यक्ति स्वयं अपनी शैली होता है। इसी संदर्भ में शैली के रूप का विवेचन करते हुए डॉ.एच.एन. यादव लिखते है– "शैली विज्ञान वह शास्त्र है, जिसमें शैली का वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है। यों तो शैली शब्द का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में किया जाता है। जैसे भाषिक शैली, चित्रशैली, स्थापत्य शैली, आदि, किन्तु शैली विज्ञान का प्रतिपाद्य केवल भाषिक शैली ही है। इसमें साहित्यिक भाषा के प्रायःसर्जनात्मक प्रयोगों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जात है। वस्तुतः शैली की सत्ता वहीं होती हैं, जहाँ भाषा का सामान्य से अलग प्रयोग हो, ऐसा प्रयोग जो सामान्य भाषा में सुलभ नहीं है। इन्हीं प्रयोगों का अध्ययन–विश्लेषण शैली विज्ञान

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science

से ही विश्लेषित किया गया है। अत प्राचीन साहित्य समिक्षको की तुलना में शैली वैज्ञानिक का विश्लेषण अधिक प्रमाणित और सूक्ष्म है। शैली विज्ञान के अनुसार काव्य भाषा के निर्माण में शब्द चयन अति महत्त्वपूर्ण माना जाता है। क्योंकि लेखक कलात्मक सौंदर्य को दष्टि में रखकर अत्यन्त सावधानी से किसी एक का चयन करता है। निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' कविता में देवी के लिए एक स्थान पर पार्वती और दुसरे स्थान पर भगवती शब्द का प्रयोग किसी विवक के आधार पर किया है।"[11] जैसे कविता की पंक्तियाँ

पार्वती कल्पना है इसकी मकरन्द बिन्दू, कह लिया भगवती ने राघवा का हाथ थाम ।

अतः यह स्पष्ट होता है कि पर्वत में देवी की कल्पना करते समय पार्वती शब्द और राम कि साधना की परिणति पर उन्हे वरदान देते समय भगवती शब्द का प्रयोग बडा कलात्मक दृष्टि से अभिव्यक्त हुआ है।

शैली वैज्ञानिक अध्ययन की और भी अनेक सीमाए है। प्रत्येक कलाकृति अपने में एक सम्पूर्ण इकाई होती है मगर जब हम शैली विज्ञान के बल पर केवल उसकी विभिन्न कलात्मक विशिष्टताओं, मौलिक प्रयोगों, वैयक्तिक प्रयोगों को खोजने लगते है, उसकी प्रशंसा करने लगते है तो हम उन समग्र इकाईयों का मूल्यांकन नही कर पाते। साहित्य और भाषा कि कथ्य शैलीयों का तुलनात्मक अध्ययन करने की परम्परा बहुत ही प्राचीन रही है। जेनोवा स्कूल के प्रमुख विद्वान सी. बैली ने शताब्दी के प्रारंभ में प्रथम बार वैज्ञानिक दृष्टि से 'कथ्यशैली' की व्याख्या जिनका प्रमाण उनके व्दारा रचित दो किताबे है।"[12] इन दो किताबो में बैली ने सामान्य शैली निर्माण और फ्रेंच भाषा की विशिष्ट शैली के लक्षणो की विवेचना की है।

शैली अध्ययन की विभिन्न प्रारम्भिक समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए फ्रांसिसी विद्वान पियेर गिरांड ने अपनी 'शैली'[13] (1954) किताब की सृजना की। शैली विज्ञान पर आर. बी. ब्रैथवेट, आर. फॉलर, एम.ए. के हेलीडे, जे. पी. थॉर्न, के. पी. उइटी आदि ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इतना ही नही कुछ वर्षों से सोवियत संघ में भी शैली विज्ञान पर बडी अभिरुचि से कार्य हो रहा है। जिसमें न. न. चिकॉव और पी. विनीग्रादोव का नाम उल्लेखनीय है।

हिंदी में शैली विज्ञान के विकास में हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, रघुवंश, डा. नामवरसिंह, डा. नगेंद्र आदि का योगदान सराहनिय रहा है। साथ ही सोविएत भाषा शोधपद्धति में दीक्षित श्रीवास्तव हिन्दी शैली विज्ञान के आज अग्रणी कार्यकर्ता है। उन्होंने 1967 में आलोचना पत्रिका में तीन निबन्ध तो 1968 में काव्य भाषा और शैली विज्ञान में उत्कृष्ट शोध पत्र प्रस्तुत किये है। तो 1972 में शोध विज्ञान और आलोचना नाम की किताब प्रकाशित की। कुछ विद्वानोंने शैली विज्ञान की अपेक्षा रीति विज्ञान शब्द से जोड दिये है। विद्यानिवास मिश्र का रीति विज्ञान ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण रहा है। तो आगे चलकर रामचंद्र प्रसाद, भोलानाथ तिवारी, अमरबहादुर सिंह, रमानाथ सहाय, सुरेशकुमार[14] आदि ने शैली विज्ञान के क्षेत्र में अपना परिचय दिया है। जिससे शैली विज्ञान का भविष्य उज्वल प्रतित होता हुआ नजर आ रहा है।

निष्कर्ष : अंत में निष्कर्ष के रूप में यह कहना अधिक उचित होगा कि जन्मतः मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते अपने विचारो का विचार–विमर्श करने हेतु भाषा माध्यम को अपनाता है । भाषा अनुसंधान और शैली विज्ञान का भाषा विज्ञान के क्षेत्र में,आलोचना के क्षेत्र में और साहित्य के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन काल से हर एक मनुष्य अपनी शैली द्वारा भाषा के क्षेत्र में नए–नए प्रयोग की नयी दिशा में अनुसंधान या खोज करने का प्रयास करता आ रहा है। भाषा अगर उसके पास नहीं होती तो वह अपने विचारों का आदान–प्रदान दूसरों तक पहुंच नही पाता । इसलिए भाषा साधन द्वारा वह अपना कार्य पुरी इमानदारी के साथ करता है। भले ही इसके लिए उसका कोई भी क्षेत्र का चयन हो ।

Reference

1. भाषा विज्ञान – डॉ.भोलानाथ तिवारी, पृ. 2
2. वही, पृ.10.
3. काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन – डॉ.गंगासहाय "प्रेमी", डॉ.श्रीमती आशा मोहन,डॉ.मनुजी श्रीवास्तव, पृ.287
4. वही, पृ.287
5. वही, पृ. 246,
6. वही, पृ.246,
7. वही, पृ.246
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त – डा. शान्ति स्वरूप गुप्त– पृ. 267
9. वही, पृ. 267, 10. वही, पृ.268, 11. वही, पृ. 269
12. भाषा विज्ञान का इतिहास – डा. महेश प्रसाद जायसवाल, पृ.199
13. वही, पृ. 201, 14. वही, पृ.204

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad